

---

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (43) खण्ड - {85}

---

समग्र मुरलियों पर आधारित अधोलिखित प्रश्नों के सबसे उपयुक्त एक ही उत्तर का चयन करें.....

प्रश्न 1- मीठे बच्चे - आज्ञाकारी बनो, बाप की पहली आज्ञा है ?

A- पवित्र बनो

B- देह के सब संबंधों को भूल जाओ

C- अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो

D- श्रीमत पर चलो।

प्रश्न 2- आत्मा रूपी बर्तन अशुद्ध क्यों हुआ है ?

A- ड्रामानुसार होना ही है।

B- वाह्यात बातों को सुनते और सुनाते।

C- भक्ति करते करते।

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न 3- हर बात में विजय का आधार क्या है ?

A- श्रीमत

B- पवित्रता

C- योगबल

D- निश्चय

प्रश्न 4- इनमे से कौन सा सही नहीं है ?

A- महल के महल नीचे गये हैं वही फिर ऊपर आ जायेंगे।

B- कलियुग में जो अच्छा काम करते हैं उन्हीं का यादगार बनाते हैं।

C- संन्यासियों ने माताओं की निंदा की है, परन्तु बाप आकर माताओं को उठाते हैं।

D- यह संन्यासी न होते तो भारत काम चिंता पर बैठ एकदम खाक हो जाता है।

प्रश्न 5- ज्ञान का सुख 21 पीढ़ी चलता है, वह है स्वर्ग का सदा सुख, भक्ति में तीव्र भक्ति से कितना सुख मिलता है ?

A- 8 पीढ़ी

B- 63 पीढ़ी

C- अल्प-काल क्षण भंगुर

D- काग विष्टा समान

प्रश्न 6- इस पुरानी दुनिया को भूल एक मुझे याद करो। इसी को ही क्या कहा जाता है ?

A- बलिहार जाना कहा जाता है।

B- जीते जी मरना कहा जाता है।

C- इसी श्रीमत से तुम्हारी सद्गति हो जाती है।

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न 7- ..... को बुद्धि में रखकर पढ़ाई करनी है।.....को बुद्धि में रखकर स्वदर्शन चक्रधारी बनना है।

A- शान्तिधाम, सुखधाम

B- बाप, वर्से

C- एम ऑब्जेक्ट, ड्रामा

D- ड्रामा, बाप

प्रश्न 8 - मनुष्य गाते भी हैं वन्दे मातरम्, परन्तु वन्दना पवित्र की ही की जाती है। परमात्मा ही आकर वन्दे मातरम् कहना शुरू करते हैं। शिवबाबा ने ही आकर कहा है ?

A- नारी स्वर्ग का द्वार है।

B- शक्ति सेना है।

C- यह स्वर्ग का राज्य दिलाने वाली है।

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न 9- तुम आत्माओं को अपना-अपना रथ है, मैं हूँ निराकार, मुझे भी ..... में एक ही बार रथ चाहिए, मैं ब्रह्मा का अनुभवी वृद्ध रथ उधार लेता हू ?

A- कलियुग

B- संगमयुग

C- कल्प

D- सृष्टि चक्र

प्रश्न 10- तुम बच्चों ने निश्चय से कहा - बाबा, हम आपके बन गये, तो बाप का बनना माना ही क्या है ?

A- सहजयोगी बनना

B- पवित्र बनना

C- शरीर का भान भूलना

D- नष्टोमोहा बनना

प्रश्न 11- बाप कहते हैं मैं आऊं तो कैसे आऊं, किसके शरीर में आऊं? पहले तो मुझे प्रजापिता चाहिए। सूक्ष्म वतनवासी को यहाँ कैसे ले आ सकता? वह तो फरिश्ता है ना। उनको पतित दुनिया में अगर ले आऊं तो यह क्या हो जाये---

A- अनर्थ हो जाए

B- पाप हो जाए

C- दोष हो जाए

D- गुनाह हो जाए

प्रश्न 12- ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को भी सूक्ष्म शरीर है। लक्ष्मी-नारायण आदि सब आत्माओं को शरीर रूपी रथ है, जिसे क्या कहते हैं।

A- जीवात्मा

B- नंदीगण

C- रथी

D- अश्व

प्रश्न 13-क्या होने के कारण बंधन बहुत अधिक हैं ?

A- हिसाब किताब

B- देह का सिमरण

C- पांच विकार

D- माया

प्रश्न 14- निम्नलिखित में कौन सा वाक्य सही नहीं है ?

A- वो इनडायरेक्ट बुलाते हैं, तुम डायरेक्ट बुलाते हो। वह भी याद करते हैं - हे परमपिता परमात्मा।

B- अच्छे शुरूड बुद्धि हैं तो फिर ऑन गॉडली सर्विस विकल्प हो जाती है।

C- जनक का भी मिसाल है। वह फिर जाकर अनु जनक बना।

D- तुम बहन-भाई ही पद पाते हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार।  
बाकी जाकर अपने-अपने झाड़ में लटकेंगे।

प्रश्न 15-परमार्थ के आधार से व्यवहार को सिद्ध करना यही  
किसका लक्षण है ?

A- देवताओं

B- ब्राह्मणों

C- योगी

D- रूहानी सेवा

प्रश्न 16- बापदादा को बच्चों की कौन-सी बात सुनकर बहुत  
खुशी होती है ?

A- याद-प्यार का पत्र लिखने से

B- खुश खैराफत का पत्र लिखने से

C- सर्विस समाचार का पत्र लिखने से

D- रोज का पोतामेल लिखने से



---

## भाग (43) खण्ड {85} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

---

उत्तर 1- \*C.अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो\*

मीठे बच्चे - आज्ञाकारी बनो, \*बाप की पहली आज्ञा है - अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो।\* जब यहाँ बैठते हो तो हमेशा ऐसे समझो - मैं आत्मा हूँ, मुझे बाप का फ़रमान मिला हुआ है मुझे याद करो। बच्चों के सिवाए तो और कोई को बाप का फ़रमान मिल न सके।

उत्तर 2- \*B.वाह्यात बातों को सुनते और सुनाते\*

\*वाह्यात बातों को सुनते और सुनाते आत्मा रूपी बर्तन अशुद्ध बन गया है।\* इसको शुद्ध बनाने के लिए बाप का फ़रमान है हियर नो ईविल, सी नो ईविल..... एक बाप से सुनो, बाप को ही याद करो तो आत्मा रूपी बर्तन शुद्ध हो जायेगा। आत्मा और शरीर दोनों पावन बन जायेंगे।

### उत्तर 3- \*D.निश्चय\*

शास्त्रों में कोई यह बातें नहीं हैं। सद्गति दाता है ही एक बाप। पहले-पहले तो यह निश्चय चाहिए। निश्चय में ही माया विघ्न डालती है। \*हर बात में विजय का आधार निश्चय है\* इसलिए निश्चयबुद्धि जरूर बनना है। सद्गति दाता बाप में कभी संशय नहीं उठाना है।

### उत्तर 4- \*A.महल के महल नीचे गये हैं वही फिर ऊपर आ जायेंगे\*

तुम जो सोमनाथ का मन्दिर देखते हो वह कोई वैकुण्ठ का नहीं है। यह तो भक्ति मार्ग में बना है, जिसको मुहम्मद गज़नवी आदि ने लूटा। बाकी देवताओं के महल आदि सब अर्थक्वेक में गायब हो जाते हैं। \*ऐसे नहीं कि महल के महल नीचे गये हैं वही फिर ऊपर आ जायेंगे।\* नहीं, वह तो अन्दर ही टूट फूट सड़ जाते हैं।

उत्तर 5- \*C.अल्प-काल क्षण भंगुर\*

अभी तुम ज्ञान सागर से ज्ञान पाकर पुरुषार्थ से अपनी सदा सुख की प्रालब्ध बना रहे हो फिर द्वापर-कलियुग में भक्ति होती है। ज्ञान की प्रालब्ध सतयुग-त्रेता तक चलती है। ज्ञान का सुख तो 21 पीढ़ी चलता है। वह हैं स्वर्ग के सदा सुख। \*भक्ति में तीव्र भक्ति से अल्प-काल क्षण भंगुर सुख मिलता है।\*

उत्तर 6- \*D.उपरोक्त सभी\*

बाप की तुम्हें श्रीमत है - इस पुरानी दुनिया को भूल एक मुझे याद करो। \*इसी को ही बलिहार जाना अथवा जीते जी मरना कहा जाता है। इसी श्रीमत से तुम श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ बनते हो। तुम्हारी सद्गति हो जाती है।\* साकार मनुष्य, मनुष्य की सद्गति नहीं कर सकते। बाप ही सबका सद्गति दाता है।

उत्तर 7- \*C.एम ऑब्जेक्ट,ड्रामा\*

यह चक्र फिरता रहता है, इसको स्वदर्शन चक्र कहा जाता है। इस ड्रामा के चक्र से कोई छूट नहीं सकता है। बना बनाया अविनाशी पार्ट है हरेक का। बाप तुमको पढ़ाकर मनुष्य से देवता बना रहे हैं। \*एम ऑब्जेक्ट को बुद्धि में रखकर पढ़ाई करनी है। बने बनाये ड्रामा को बुद्धि में रखकर स्वदर्शन चक्रधारी बनना है।\*

उत्तर 8- \*D.उपरोक्त सभी\*

मनुष्य गाते भी हैं वन्दे मातरम्, परन्तु वन्दना पवित्र की ही की जाती है। परमात्मा ही आकर वन्दे मातरम् कहना शुरू करते हैं। \*शिवबाबा ने ही आकर कहा है - नारी स्वर्ग का द्वार है। शक्ति सेना है ना। यह स्वर्ग का राज्य दिलाने वाली है,\* जिसको ही वर्ल्ड आलमाइटी अथॉरिटी राज्य कहा जाता है।

उत्तर 9- \*C.कल्प\*

मीठे-बच्चे - तुम आत्माओं को अपना-अपना रथ है, मैं हूँ निराकार, \*मुझे भी कल्प में एक ही बार रथ चाहिए,\* मैं ब्रह्मा का अनुभवी वृद्ध रथ उधार लेता हूँ।

## उत्तर 10- \*C.शरीर का भान भूलना\*

तुम बच्चों ने निश्चय से कहा - बाबा, हम आपके बन गये, \*तो बाप का बनना माना ही शरीर का भान भूलना।\* जैसे शिवबाबा इस रथ पर आता और चला जाता, ऐसे तुम बच्चे भी प्रैक्टिस करो इस रथ पर आने-जाने की। अशरीरी बनने का अभ्यास करो। इसमें मुश्किल का अनुभव नहीं होना चाहिए। अपने को निराकारी आत्मा समझ बाप को याद करो।

## उत्तर 11- \*C.दोष हो जाए\*

बाप कहते हैं मैं आऊं तो कैसे आऊं, किसके शरीर में आऊं? पहले तो मुझे प्रजापिता चाहिए। सूक्ष्म वतनवासी को यहाँ कैसे ले आ सकता? वह तो फरिश्ता है ना। \*उनको पतित दुनिया में ले आऊं - यह तो दोष हो जाए\* । कहेंगे मैंने क्या गुनाह किया? बाप बड़ी रमणीक बातें समझाते हैं।

उत्तर 12- \*D.अश्व\*

जैसे तुम हर एक आत्मा को अपना-अपना रथ है ना।  
ब्रह्मा, विष्णु, शंकर को भी सूक्ष्म शरीर है ना। \*लक्ष्मी-  
नारायण आदि सब आत्माओं को शरीर रूपी रथ है जरूर,  
\*जिसको अश्व कहते हैं।\* हैं तो मनुष्य ना। मनुष्यों की ही  
बात समझाई जाती है, जानवरों की बातें जानवर जानें।

उत्तर 13- \*B.देह का सिमरण\*

बाप को बुलाते हैं कि हम अभी बन्धन में हैं, आपके  
सम्बन्ध में आना चाहते हैं। भक्तों को याद है हम अनेक  
प्रकार के बन्धनों में हैं। \*देह का सिमरण होने कारण बन्धन  
बहुत हैं।\* देही के सम्बन्ध से एक ही मात-पिता याद रहता है।  
लौकिक और पारलौकिक को याद करने में रात-दिन का फ़र्क  
है।

उत्तर 14- \*B.अच्छे शुरूड बुद्धि हैं तो फिर ऑन गॉडली  
सर्विस विकल्प हो जाती है\*

कन्यायें कहेंगी मेरा तो एक शिवबाबा..... कन्याओं को इसमें पूरा अटेन्शन देना है। इस गवर्मेन्ट के हो गये तो फिर ईश्वरीय सर्विस में लग जाना है। फिर आसुरी सर्विस कैसे कर सकती? हर एक के कर्मबन्धन अनुसार राय दी जाती है। देखा जाता है, निकल सकती हैं वा नहीं। \*अच्छे शुरुड बुद्धि हैं तो फिर ऑन गॉडली सर्विस ओनली हो जाती है।\*

उत्तर 15- \*C.योगी\*

स्थान अथवा दूसरे को बदलने के बजाए स्वयं को बदल लो, सहनशीलता का अवतार बन जाओ। सबके साथ स्वयं को एडजेस्ट करना सीखो। \*परमार्थ के आधार से व्यवहार को सिद्ध करना - यही योगी का लक्षण है।\*

उत्तर 16- \*C.सर्विस समाचार का पत्र लिखने से\*

\*जब बच्चे सर्विस समाचार का पत्र लिखते हैं\* - बाबा, आज हमने फलाने को समझाया, उसको दो बाप का परिचय दिया.... ऐसे-ऐसे सेवा की। \*तो बाबा उन पत्रों को पढ़कर बहुत खुश होते हैं।\* याद-प्यार वा खुश खैराफत का पत्र

लिखने से बाबा का पेट नहीं भरता। बाबा अपने मददगार बच्चों को देख खुश होते हैं।

---

कौन बनेगा पास विद् ऑनर प्रश्नोत्तरी

भाग - (43) खण्ड - {86}

---

प्रश्न 1- अभी घोर अन्धियारा, भयानक रात पूरी हो रही है, तुम्हें दिन में चलना है, यह ब्रह्मा के किस बात की ही कहानी है ?

A- मुक्ति और जीवनमुक्ति

B- बेहद दिन और रात

C- पुरुषार्थ और प्रारब्ध

D- ज्ञान और वैराग्य

प्रश्न 2- स्वर्ग के घनेरे सुख किस पुरुषार्थ के आधार से मिलते हैं ?



A- विहंग मार्ग की सर्विस करने से

B- एक बाप से सच्चा लव रखने से

C- रोज़ की पढ़ाई और योग से

D- कर्मतीत अवस्था को प्राप्त करने से

प्रश्न 3- बाप कहते हैं हमारा बनकर फिर थक कर बैठ गये वा  
ट्रेटर बन गये तो प्रजा में जाकर क्या बनेंगे ?

A- नौकर चाकर

B- चण्डाल

C- गरीब प्रजा

D- साहूकार के दास दासी

प्रश्न 4- निम्नलिखित में कौन सा वाक्य सही नहीं है ?

A- सतयुगी देवी-देवता धर्म का शास्त्र है एक, उनको श्रीमत  
भगवत गीता कहा जाता है।

B- यह भी ड्रामा में एकज भूल है, जो शास्त्रों का खण्डन कर दिया है।

C- पढ़ाई छोड़ दी तो मात-पिता कहेंगे तुम तो लायक नहीं हो।

D- स्वर्ग का मालिक बनते-बनते अगर पढ़ाई को छोड़ देते तो उन जैसा महान् मूर्ख दुनिया में कोई होता नहीं।

प्रश्न 5- अपनी श्रेष्ठ वृत्ति से वायुमण्डल को श्रेष्ठ बनाना यही है ?

A- सच्च ज्ञान

B- सच्ची सेवा

C- सच्चा योग

D- सच्ची धारणा

प्रश्न 6-भारत में रावण राज्य है, जिसको क्या कहा जाता है ?

A- पतित दुनिया

B- शोकवाटिका

C- नर्क

D- छी- छी दुनिया

प्रश्न 7- बच्चे चलते -चलते याद की यात्रा में ही थक जाते हैं, इसमें थकावट आने का मुख्य कारण क्या है ?

A- व्यर्थ संकल्प

B- बाप की अवज्ञा

C- संगदोष

D- अलबेलापन

प्रश्न 8- सतयुग में जब लक्ष्मी-नारायण तख्त पर बैठते हैं तो क्या मनाते हैं ?

A- उत्सव

B- कारोनेशन

C- दशहरा

D- दीपमाला

प्रश्न 9- याद रूपी दवाई से स्वयं को एवर निरोगी बनाओ, याद और स्वदर्शन चक्र फिराने की आदत डालो तो क्या बन जायेंगे ?

A- ब्रह्मा बाप समान

B- विकर्माजीत

C- राजयुक्त, युक्तियुक्त, योगयुक्त

D- स्वदर्शनचक्रधारी

प्रश्न 10- निम्नलिखित में कौन सा वाक्य सही नहीं है ?

A- बृहस्पति को वृक्षपति डे कहा जाता है।

B- सोमनाथ का दिन बृहस्पति है, शिवबाबा सोमरस पिलाते हैं।

C- यूँ नाम तो उनका शिव है परन्तु पढ़ाते हैं, इसलिए सोमनाथ कह दिया है।

D- जो देही-अभिमानी नहीं बनते हैं उन्हें धारणा भी नहीं होती है।

प्रश्न 11- ..... की एनर्जी को वेस्ट से बेस्ट में चेंज कर दो तो शक्तिशाली बन जायेंगे ?

A- समय

B- संकल्प

C- बोल

D- उपरोक्त सभी

प्रश्न 12- सदा अपने स्वमान में रहो तो ?

A- स्वमानधारी बन जायेंगे।

B- श्रेष्ठ शान में रहने वाले बन जायेंगे।

C- सर्व का मान मिलता रहेगा।

D- विघ्न विनाशक बन जाएंगे।

प्रश्न 13- सावधान हो पढ़ाई पर पूरा ध्यान दो, ऐसे नहीं कि हमारा तो डायरेक्ट शिवबाबा से कनेक्शन है, यह कहना भी क्या है ?

A- देह-अभिमान

B- अहंकार

C- रोंग

D- माया

प्रश्न 14- भारत बाप का बर्थ प्लेस होने के कारण अविनाशी खण्ड है, इस अविनाशी खण्ड में सतयुग और त्रेतायुग में चैतन्य देवी-देवता राज्य करते हैं, इसलिए उस समय के भारत को क्या कहा जाता है ?

A- शिवालय

B- स्वर्ग

C- हेविन

D- सुखधाम

प्रश्न 15- जिसे स्वमान का अभिमान नहीं है वही सदा क्या है ?

A- नम्रचित्त

B- निर्मान

C- सरलचित्त

D- स्वमानधारी

प्रश्न 16- जितना निरहंकारी उतना अच्छा है, तुम्हारी नॉलेज ही है-

A- पावन बनने की।

B- चुप रहने की।

C- निरहंकारी बनने की।

D- निर्विकारी बनने की।

---

भाग (43) खण्ड {86} के उत्तर स्पष्टीकरण सहित

---

\*उत्तर 1 - B बेहद दिन और रात\*

\*अभी घोर अन्धियारा, भयानक रात पूरी हो रही है, तुम्हें दिन में चलना है\* वह दिन और रात तो कॉमन है \*यह ब्रह्मा के बेहद दिन और रात की ही कहानी है"\* बेहद का दिन सतयुग-त्रेता और रात द्वापर-कलियुग ।

\*उत्तर 2 - C रोज की पढ़ाई और योग से\*

\*रोज़ की पढ़ाई और योग से, स्वर्ग के घनेरे सुख मिल जायेंगे\* इसलिए पढ़ाई में कभी थकना नहीं। बाप टीचर बनकर पढ़ा रहे हैं तो तुम अच्छे मार्क्स से पास होने का पुरुषार्थ करो ।



### \*उत्तर 3 - B चंडाल\*

बाप से स्वर्ग का वर्सा लेते-लेते कई बच्चे थक जाते हैं। चलते-चलते माया वार कर देती है तो लौट जाते हैं। जो जमा किया वह फिर ना हो जाती। बाकी क्या बनेंगे? स्वर्ग में भल जायेंगे, लेकिन बिल्कुल साधारण प्रजा जाकर बनेंगे। बाप कहते हैं हमारा बनकर फिर थक कर बैठ गये वा ट्रेटर बन गये तो प्रजा में चण्डाल जाकर बनेंगे।

\*उत्तर 4 - B यह भी ड्रामा में एकज भूल है, जो शास्त्रों का खंडन कर दिया है\*

\*सतयुगी देवी-देवता धर्म का शास्त्र है एक, उनको श्रीमत् भगवत् गीता कहा जाता है। पढ़ाई छोड़ दी तो मात-पिता कहेंगे तुम तो लायक नहीं हो।\* बाप से स्वर्ग का वर्सा लेते-लेते कई बच्चे थक जाते हैं। चलते-चलते माया वार कर देती है तो लौट जाते हैं। \*स्वर्ग का मालिक बनते-बनते अगर पढ़ाई को छोड़ देते तो उन जैसा महान् मूर्ख दुनिया में कोई होता नहीं\*

\*उत्तर 5- B सच्ची सेवा\*

\*अपनी श्रेष्ठ वृत्ति से वायुमण्डल को श्रेष्ठ बनाना यही सच्ची सेवा है।\*

\*उत्तर 6- B शोक वाटिका\*

तुम बच्चे अब जानते हो रावण राज्य पूरा हो फिर रामराज्य शुरू होता है। राम जरूर सुख देने वाला होगा, रावण जरूर दुःख देने वाला होगा। \*भारत में रावण राज्य है तो उनको शोकवाटिका कहा जाता है।\* बाप ने समझाया है तुम सब इस समय रावण राज्य में हो। मुख्य भारत की ही बात है।

\*उत्तर 7- C संगदोष\*

बच्चे चलते-चलते याद की यात्रा में ही थक जाते हैं, \*इसमें थकावट आने का मुख्य कारण है संगदोष।\* संग ऐसा मिल जाता है जो बाप का हाथ छोड़ देते हैं। कहा जाता है संग तारे, कुसंग बोरे।

### \*उत्तर 8- B कारोनेशन\*

यहाँ रावण राज्य के कारण 12 मास के बाद दीपमाला मनाते हैं। रावण मरा और लक्ष्मी-नारायण का कारोनेशन हुआ। उनकी खुशी मनाते हैं। \*सतयुग में जब लक्ष्मी-नारायण तख्त पर बैठते हैं तो कारोनेशन मनाते हैं।\* तुम जानते हो अभी रावण राज्य पूरा होगा।

### \*उत्तर 9- B विकर्माजीत\*

याद रूपी दवाई से स्वयं को एवर निरोगी बनाओ, \*याद और स्वदर्शन चक्र फिराने की आदत डालो तो विकर्माजीत बन जायेगे\*

\*उत्तर 10- B सोमनाथ का दिन बृहस्पति है, शिव बाबा सोमरस पिलाते हैं\*

तुम बच्चे जानते हो बृहस्पति को वृक्षपति डे कहा जाता है। वृक्षपति भी ठहरा, शिव भी ठहरा। है तो एक ही।

\*गुरुवार के दिन बच्चों को स्कूल में बिठाते हैं। जैसे सोमनाथ का दिन सोमवार है, शिवबाबा सोमरस पिलाते हैं।\* यूँ नाम तो उनका शिव है परन्तु पढ़ाते हैं इसलिए सोमनाथ कह दिया है। रुद्र भी सोमनाथ को कहा जाता है। रुद्र ज्ञान यज्ञ रचा तो ज्ञान सुनाने वाला हो गया। नाम बहुत रख दिये हैं।

\*उत्तर 11- D समय, संकल्प, बोल\*

\*समय, संकल्प और बोल की एनर्जी को वेस्ट से बेस्ट में चेंज कर दो तो शक्तिशाली बन जायेंगे।\*

\*उत्तर 12- C सर्व का मान मिलता रहेगा\*

\*सदा अपने स्वमान में रहो तो सर्व का मान मिलता रहेगा।\*

\*उत्तर 13- A देह-अभिमान\*

सावधान हो पढ़ाई पर पूरा ध्यान दो, ऐसे नहीं कि हमारा तो डायरेक्ट शिवबाबा से कनेक्शन है, \*यह कहना भी

देह-अभिमान है'\*

\*उत्तर 14- A शिवालय\*

भारत बाप का बर्थ प्लेस होने के कारण अविनाशी खण्ड है, \*इस अविनाशी खण्ड में सतयुग और त्रेतायुग में चैतन्य देवी-देवता राज्य करते हैं, उस समय के भारत को शिवालय कहा जाता है।\* फिर भक्तिमार्ग में जड़ प्रतिमायें बनाकर पूजा करते, शिवालय भी अनेक बनाते तो उस समय भी तीर्थ है इसलिए भारत को अविनाशी तीर्थ कह सकते हैं।

\*उत्तर 15- B निर्मान\*

\*जिसे स्वमान का अभिमान नहीं है वही सदा निर्मान है।\*

\*उत्तर 16- B चुप रहने की\*

शिव-बाबा को बिल्कुल नहीं जानते। तो गुप्त रहना अच्छा है। \*जितना निरहंकारी उतना अच्छा है। तुम्हारी

नॉलेज ही है चुप रहने की\* बाप की बैठ महिमा करनी है।  
उनसे ही समझ जायेंगे बाप पतित-पावन सर्वशक्तिमान है।  
बाप से ही वर्सा मिलता है।